विद्या भवन बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत विषय शिक्षक श्यामउदय सिंह

- श्लोक निनादय नवीनामये वाणि ! वीणाम्
  मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्
  मधुर-मञ्जरी -पिञ्जरी -भूत-माला:
  वसन्ते लसन्तीह सरसा रसाला:
  कलापा: ललित-कोकिला-काकलीनाम्।।
  निनादय.....।।
- शब्दार्थ:- नवीनामये - हे सुंदर मुख वाली
  वाणि - हे सरस्वती
  गाय -गाओ
  गीतिम् -गीत को
  मधुर -मीठी
  काकलीनाम् -कोयल के स्वरों
- सरलार्थ - हे सरस्वती (वाणी) ! आप अपनी नवीन वीणा को बजाओ।
  आप सुन्दर नीति से युक्त मीठे गीत को गाओ।
  वसन्त ऋतु में यहाँ मीठे आम के फूलों की पीले रंग की पंक्तियों से युक्त और कोयलों की सुंदर ध्वनि वाले मधुर आम के पेड़ों के समूह शोभा पा रहे हैं।